विचार बिन्दु

आत्मविश्वास सरीखा दूसरा कोई मित्र नहीं। यही हमारी उन्नति में सबसे बड़ा सहायक होता है। – स्वामी विवेकानंद

बधाई, शुभ कामनाएं, आभार और अभिवादन!

आज हमारा सबसे बड़ा पर्व है और मेरा यह सौभाग्य है कि आज अपने संपादकीय आलेख के माध्यम से आप सबको इस आलोक पर्व की शुभ कामनाएं समर्पित कर रहा हूं। बृहदारण्य कोपनिषद् में कितनी सुंदर बात कही गई है:–**असतोमासद्गमय। तमसोमाज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतंगमय** ॥ अर्थात 'मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो'। हम सब प्रकाश की तरफ कदम बढ़ाएं और हमारा जीवन सदा आलोकित रहे – इस पर्व पर यही मंगल कामना है!

यह संपादकीय एक और कारण से मेरे लिए बहुत ख़ास है।

राष्ट्रदूत में मेरा यह 500वां संपादकीय है। 24 सितंबर, 2015 को राष्ट्रदूत में मेरा पहला अतिथि संपादकीय छपा था। तब सोचा ही नहीं था कि यह यात्रा इस मुकाम तक आ पहुंचेगी। इस बीच एक भी सोमवार ऐसा नहीं बीता जब अख़बार में इस जगह मेरा संपादकीय न छपा हो। हां, त्यौहार आदि की वजह से अगर किसी सोमवार अख़बार ही नहीं छपा तो बात अलग है। वैसे ऐसा बहुत ही कम हुआ है। मेरा संपादकीय आलेख 'राष्ट्रदूत' के सारे संस्करणों में छपा इसलिए, और इसलिए भी कि यहां प्रकाशित होने के बाद मैं इसे विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर भी साझा करता रहा हूं, मुझे खूब पाठक मिले हैं। इधर मैं उन दोस्तों के लिए, जिन्हें लम्बे आलेख पढ़ने में असुविधा होती है, अपने संपादकीय की ऑडियो फ़ाइल्स भी भेज देता हूं, और मेरे बहुत सारे मित्र मेरा लिखा पढ़ने की बजाय मेरा लिखा सुनने में अधिक आसानी अनुभव करते हैं। आज यह अवसर है कि मैं अपने सारे आदरणीय पाठकों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करूं। लगभग दस साल की इस दीर्घ अवधि में अपने पाठकों से मेरा ऐसा रिश्ता बन गया है जो दो तरफ़ा है। वे मुझे अपनी बात कहते हैं, सुझाव देते हैं और कभी–कभार असहमत भी होते हैं। उनकी बात मुझे अपने लिखे को और बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होती है। बहुत–बहुत आभार मेरे प्रिय पाठकों।

जितना आभार मैं अपने पाठकों का मानता हूं उतना ही आभार मेरे मन में पूरे राष्ट्रदूत परिवार के लिए भी है। इधर इस बात की बहुत चर्चा होती है, और मैं भी ऐसी चर्चाएं अनेक बार कर चुका हूं कि हमारे यहां अभिव्यक्ति की आज़ादी सिकुड़ती जा रही है। लेकिन जहां तक राष्ट्रदूत का सवाल है, उसे मैं इस आलोचना से बाहर रखता हूं। यह बात ख़ुद मेरे लिए भी अत्यधिक आश्चर्यजनक है कि इन दस वर्षों में, और कुल 499 संपादकीयों में एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि 'राष्ट्रदूत' की तरफ से मुझे कहा गया हो कि यह न लिखा जाए, या उन्होंने मेरे लिखे में कुछ बदला हो। मेरा हर संपादकीय लगभग एक हज़ार चार सौ शब्दों का होता है। इस तरह इन दस वर्षों में राष्ट्रदूत ने मेरे लिखे लगभग सात लाख शब्द, बिना एक भी शब्द को बदले प्रकाशित किए हैं। अभिव्यक्ति की इससे बड़ी आज़ादी और क्या हो सकती है? इस वैचारिक उदारता के लिए 'राष्ट्रदूत' का अभिवादन और अभिनंदन!

मैंने बहुत बार सोचा है और बहुत बार मेरे शुभ चिंतकों ने भी मुझे इस बारे में सोचने को प्रेरित किया है। मूलतः मैं साहित्य की दुनिया का प्राणी हूं। ये संपादकीय लिखना शुरु करने से पहले भी साहित्य की दुनिया में मेरी थोड़ी–बहुत प्रतिष्ठा थी। अब लोग मुझे एक स्तंभकार के रूप में अधिक जानने लगे हैं। ख़ुद मेरा भी बहुत सारा समय इन संपादकीयों को लिखने में जाता है। स्वभावतः इससे मेरा साहित्यिक रचना कर्म प्रतिकूलतः प्रभावित हुआ है। मैंने बार–बार सोचा है कि क्या मुझे अपने इस वैचारिक लेखन को छोड़ कर या कम करके फिर से अपनी साहित्य की दुनिया में अधिक सक्रिय होना चाहिए! मेरे बहुत सारे शुभ चिंतक ऐसा ही चाहते हैं। मैं इस मुद्दे पर बार–बार सोचता रहा हूं और अब यह मानने लगा हूं कि देश और दुनिया की वर्तमान स्थितियों में एक नागरिक के रूप में मुझे अपना दायित्व निबाहने के लिए इस तरह का लेखन करते रहना चाहिए।

> **नई तकनीक के प्रसार की वजह से आप बड़े से बड़े कलाकार को लगभग निःशुल्क देख-सुन सकते हैं, उसकी कला के बारे में अपनी जानकारी और समझ को बढ़ा सकते हैं। आप घर बैठे, और बिना कुछ खर्च किए और बिना कहीं गए दुनिया के बड़े से बड़े संग्रहालय की सैर कर सकते हैं और उसकी कलाकृतियों का अवलोकन कर सकते हैं। तकनीक के ये बेशकीमती उपहार हममें से हरेक को सुलभ हैं, लेकिन यह जानना बहुत कष्टदायक है कि हममें से अधिकांश न केवल इनका ठीक-ठाक उपयोग नहीं करते हैं, हममें से बहुत सारे लोग तो इनके अस्तित्व से ही अनजान हैं! कैसी त्रासदी है कि हमारे चारों तरफ बेशकीमती खज़ाना बिखरा पड़ा है और हमें यह बात मालूम ही नहीं है।**

आज की दुनिया बहुत ज़्यादा बदल चुकी है। बहुत सारे अच्छे बदलाव हुए हैं तो बहुत सारे बदलाव ऐसे भी हुए हैं जो न होते तो ज़्यादा अच्छा होता। लेकिन सब कुछ अपने चाहने से तो होता नहीं है। यह भी कि जो बदलाव मुझे अप्रिय लगते हैं वे बहुतों को सराहनीय भी लगते हैं। सोच का अंतर अस्वाभाविक नहीं है। ऐसे में संवाद की, अपनी बात कहने के मंच की, अपनी बात कहने की आज़ादी की, और अपनी बात कहने के कौशल की अहमियत और ज़्यादा बढ़ जाती है। मुझे लगता है कि जितना इस दुनिया को मैंने देखा, जाना और समझा है, जो थोड़ा बहुत पढ़ा है, अच्छे और ज्ञानवान लोगों की सोहबत से जो सीखा है – इन सबके कारण मेरा यह हक़ बनता है कि मैं अपनी बात कहूं। कोई ज़रूरी नहीं है कि मेरे लिखे को पढ़ने वाला हर पाठक मेरी बात से सहमत हो। जितनी महत्ता सहमति की है उससे कम महत्ता असहमति की नहीं है। अपने पहले के लिखे संपादकीयों को पढ़ते हुए बहुत बार मैंने महसूस किया है कि कुछ बरस पहले बहुत सारी चीज़ों के प्रति मेरा जो नज़रिया था वह अब बदल गया है। अपने नज़रिये में बदलाव की बात को स्वीकार करने में मुझे कोई संकोच नहीं है। अपने बहुत लोकप्रिय एक गीत जीवन की आपाधापी में हरिवंश राय बच्चन ने क्या खूब लिखा है:–मैं जहां खडा था कल, उस थल पर आज नहीं/ कल इसी जगह पर पाना मुझको मुश्किल है।असल में बदलाव जीवन का बड़ा यथार्थ है। सब कुछ बदलता है– और इस सब कुछ में हमारे विचार भी शामिल हैं।

साहित्य, कला, संस्कृति – ये सब जीवन के लिए बहुत ज़रूरी हैं। इनसे हमारी रुचि का ही परिष्कार नहीं होता है, हमारी संवेदना को भी बल मिलता है। हम बेहतर मनुष्य बनते हैं। यह देखना बहुत सुखद है कि नई तकनीक ने कला–संस्कृति केबहुत सारे उपादानों को अब बहुत अधिक सुलभ बना दिया है। भले ही शहरों में किताबों की दुकानें कम हों, ई कॉमर्स के ठिकानों की वजह से किताबें खरीदना आज अधिक सुगम हुआ है। जो किसी भी कारण से किताब खरीद पाने में दिक्कत महसूस करते हैं उनके लिए भी तकनीक ने ऐसे बहुत सारे साधन सुलभ करा दिए हैं जिनका उपयोग कर वे किताबों की दुनिया की सैर कर सकते हैं। भले ही यह नैतिक न हो, दुनिया भर की किताबें और पत्र–पत्रिकाएं आपको पीडीएफ फॉर्मेट में मुफ़्त में मिल जाती हैं। नई तकनीक के प्रसार की वजह से आप बड़े से बड़े कलाकार को लगभग नि:शुल्क देख–सुन सकते हैं, उसकी कला के बारे में अपनी जानकारी और समझ को बढ़ा सकते हैं। आप घर बैठे, और बिना कुछ खर्च किए और बिना कहीं गए दुनिया के बड़े से बड़े संग्रहालय की सैर कर सकते हैं और उसकी कलाकृतियों का अवलोकन कर सकते हैं। तकनीक के ये बेशकीमती उपहार हममें से हरेक को सुलभ हैं, लेकिन यह जानना बहुत कष्टदायक है कि हममें से अधिकांश न केवल इनका ठीक–ठाक उपयोग नहीं करते हैं, हममें से बहुत सारे लोग तो इनके अस्तित्व से ही अनजान हैं! कैसी त्रासदी है कि हमारे चारों तरफ बेशकीमती खज़ाना बिखरा पड़ा है और हमें यह बात मालूम ही नहीं है। शायद ऐसी ही किसी मनःस्थिति में तुलसीदास जी ने कहा होगा किसकल पदारथएहि जग मांही, करमहीन नर पावत नाहीं।

यह भी मैं अपना दायित्व समझता हूं कि समय–समय पर अपने पाठकों से कला–साहित्य–संस्कृति के मुद्दों पर बात करूं! आखिर मैंने भी तो किसी से सीखा ही है। अब भी सीखता हूं। जो मैंने जाना और सीखा है उसे आगे बढ़ाना मेरा कर्तव्य है और इस कर्तव्य का निर्वहन मैं निस्संकोच भाव से करता हूं। मेरा स्पष्ट मत है कि संवाद का माहौल बना रहना चाहिए। सहमति असहमति उसके बाद की बात है। मेरे ये लेख संवाद के सिलसिले को बनाए रखने का ही उपक्रम हैं और मुझे खुशी है कि इस उपक्रम में आप सब मेरे सहयोगी और सहयात्री हैं।

आप सबके प्रति एक बार फिर हार्दिक कृतज्ञता, सादर अभिवादन, और दीपावली की हार्दिक शुभ कामनाएं!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अमेरिकन दबाव से सफ़ेद सोना उत्पादक किसानों के आये काले दिन

रामपाल जाट

अमेरिका ने भारतीय कपड़ा उत्पादों पर 50% शुल्क आरोपित किया है। भारत की ओर से यह निर्यात 48 करोड़ डॉलर का है, जो कुल कपड़ा निर्यात का 6% एवं औद्योगिक जगत के कुल मूल्य का 1.5% से कम है। दूसरी ओर अमेरिका द्वारा भारत में आयात होने वाले कपास पर भारत सरकार द्वारा 11% आयात शुल्क को 19 अगस्त से 30 सितंबर तक की अवधि के लिए हटा दिया, अब इस आयात शुल्क की छूट अवधि 31 दिसंबर तक बढ़ा दी गई है।

कपास को सफेद सोना कहा जाता है, इसलिए ब्रिटिश काल में इसके लिए कृषि उत्पाद बाजार समिति का निर्माण किया गया था। अब महाराष्ट्र सरकार द्वारा गठित की गई विशेष जांच समिति द्वारा इसी कपास को 'हत्यारी कपास' के नाम से संबोधित किया गया। कपास का उत्पादन 60 लाख किसान परिवारों की आजीविका का आधार है। प्रसंस्करण, व्यापार एवं वस्त्र उद्योग से सम्बंधित कार्यों में अप्रत्यक्ष रूप से 4 करोड़ जनता की आजीविका का आधार है। कपास भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। स्वतंत्रता संग्राम में भी कपास महत्वपूर्ण प्रतीक था। उस समय सूत कातने के लिए चरखा संग्राम का आधार बना था। जब विश्व के अनेक देशों में तन ढकने के लिए पेड़ों की छाल एवं पत्तों का उपयोग किया जाता था, तब भारत में ग्राम स्तर पर कपास का उत्पादन होता था। जिससे अनेक प्रकार के परिधान तैयार होते थे। उस समय विश्व व्यापार में भारत की भागीदारी सर्वाधिक थी।

भारत के कपड़े से बनी हुई चुन्नी इंग्लैंड की महिलाओं में आकर्षण का केंद्र थी। तब भारत का कपड़ा सोने के भाव बिकता था। उस समय इंग्लैंड को में भारत के कपड़े को रोकने के लिए स्वदेशी आंदोलन चलाना पड़ा तथा चुन्नी खरीदने वाली महिलाओं को रोकने के लिए एक पाउंड के अर्थ दंड का प्रावधान करना पड़ा। मानव के लिए रोटी, कपड़ा और मकान अनिवार्य आवश्यकता है। इसलिए कपड़ा सहज रूप से स्वीकार्य और 'स्वदेशी अपनाओ' के अंतर्गत विदेशी कपड़ों की 'होली जलाना' लोकप्रिय आंदोलन बन गया था। सरकारी नीतियों के कारण से महाराष्ट्र का मराठवाडा एवं विदर्भ क्षेत्र कपास उत्पादकों में आत्महत्या की पहचान बन गया। भारत के किसानों को कृषि उत्पादों के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति से प्रतियोगिता करनी पड़ती है। यह बराबरी की प्रतियोगिता नहीं है, क्योंकि प्रतियोगिता बराबरी वालों में ही होती है। भारत के किसानों के साथ सरकार खड़ी दिखाई नहीं देती वरन किसानों को कंपनियों के भरोसे लुटने के लिए छोड़ रखा है। राजनीतिक दल एवं नेता मतदाता के साथ नहीं वरन चंदादाता के साथ खड़े दिखाई देते हैं।

भारत में कपास उत्पादन का क्षेत्र वर्ष 2013–14 से लेकर 2024–25 तक 10.83 से लेकर 13.48 मिलियन हेक्टेयर रहा है। इसी अवधि में कपास का उत्पादन 29.40 से लेकर 36.07 मिलियन टन रहा है। उत्पादकता 378 से लेकर 512 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रही है। कपास उत्पादन में गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगाना, राजस्थान, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, ओडीसा, पंजाब, तमिलनाडु जैसे राज्य अग्रणी भूमिका में है। देश में कपास उत्पादन से कोई भी राज्य अछूता नहीं है। इसके उपरांत भी किसानों को उत्पादन लागत प्राप्त नहीं हो पाती है। यथा – वर्ष 2024–25 में कपास की सी–2 संपूर्ण लागत 6717 रूपये प्रति क्विंटल थी किंतु किसानों को एक क्विंटल कपास के दाम 5500 से लेकर 6500 रूपये ही प्राप्त हुए।

2024–25 में घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य मध्यम रेशे का 7121 रूपये, लंबे रेशे का 7521 रूपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया। संपूर्ण लागत सी–2 के अनुसार न्यूनतम समर्थन मूल्य 10,075.50 रूपये प्रति क्विंटल होना चाहिए था। इसके अनुसार घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से क्रमशः 2954.50 से लेकर 2554.50 रुपए कम निर्धारित किया गया।

भारत सरकार की 8 अप्रेल 2025 की समाचार विज्ञप्ति के अनुसार 31 मार्च 2025 तक कपास 525 लाख क्विंटल न्यूनतम समर्थन मूल्य पर भारतीय कपास निगम द्वारा क्रय किया गया जो था, जो कुल आवक की 38% कपास थी। भारत सरकार द्वारा बजट वर्ष 2018–19 में लागत पर 50% से अधिक लाभांश देने का संकल्प व्यक्त किया गया था। उस संकल्प के अनुसार सम्पूर्ण लागत (सी– 2) पर 50% लाभांश जोड़ा जाता तो किसानो को एक क्विंटल कपास पर 2954.50 रुपए अधिक प्राप्त होते। यानि इस संकल्प के आधार पर गणना नहीं करने के कारण किसानो को 15511.13 करोड़ रुपए का घाटा उठाना पड़ा। शेष 62ङ कपास 856.58 लाख क्विंटल को तो घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य भी प्राप्त नहीं हुआ बल्कि किसानो को बाज़ार में एक क्विंटल कपास के दाम 5500 से लेकर 6500 रुपए प्राप्त हुए। घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी इसके मध्य बिंदु 6000 रुपए मानने पर घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी एक क्विंटल पर 1121 रुपए का घाटा हुआ। सरकार के बजटीय संकल्प के अनुसार लागत पर 50% लाभांश जोड़ने पर एक क्विंटल का घाटा 4075.50 रुपए है। खुले बाज़ार में 856.58 लाख क्विंटल विक्रय पर प्रति क्विंटल 4075.50 रुपए कम मिलने से कुल 34909.92 करोड़ का घाटा हुआ। इस वर्ष देश के किसानों को कपास के न्यूनतम समर्थन मूल्य एवं खुले बाजार में विक्रय दोनों का सकल घाटा 50421.05 करोड़ रुपए हुआ।

भारत सरकार द्वारा 8 अप्रेल 2025 को प्रसारित समाचार विज्ञप्ति के अनुसार 525 लाख क्विंटल में 100 लाख गांठ होना दर्शाया है। भारतीय मानक के अनुसार एक गांठ का भार 170 किलोग्राम यानि एक क्विंटल 70 किलोग्राम होता है। मानक के अनुसार 525 लाख क्विंटल में गाठों की संख्या 308 होनी चाहिए। जबकि इस सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार तो एक गांठ में 525 किलोग्राम की मात्रा है। इस में अनुमानित उत्पादन 294.25 गांठे दर्शाया है, भारतीय मानक 170 किलोग्राम प्रति गांठ के अनुसार कुल अनुमानित उत्पादन 500.23 लाख क्विंटल (5.0023 मिलियन टन) होता है। केंद्र सरकार की अधिकृत विज्ञप्ति में ऐसी त्रुटि सरकारी आंकड़ों की विश्वसनीयता पर ही प्रश्न चिन्ह लगाती है। इसका सत्यापन कर सार्वजनिक रूप से स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।

वर्ष 2025–26 में मध्यम रेशे की कपास का ए 2ङ एफ एल के सूत्र के आधार पर न्यूनतम समर्थन मूल्य 7710 रूपये प्रति क्विंटल घोषित किया है, जो सी –2 संपूर्ण लागत के अनुसार 10075.50 रुपए होना चाहिए। इस सूत्र के अनुसार प्रति क्विंटल पर 2365.50 का घाटा संभावित है। सरकार के द्वितीय आकलन के अनुसार वर्ष 2024–25 का अनुमानित उत्पादन 29.4 मिलियन टन है, उसका 6954.57 करोड़ रुपए तो न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारण में ही कम कर दिया है।

भारत में कपास दीपावली के आस–पास तैयार होगी और देश के वस्त्र–उद्योगपतियों ने अमेरिकन कपास आयात करने के आदेश दे दिए हैं, जो भारत की कपास तैयार होने के पूर्व प्राप्त हो जाएगी। परिणामतः: भारत के कपास उत्पादकों को अपनी कपास ओने–पौने दामों में बेचने के लिए विवश होना पड़ेगा।

कपास के उत्पादन में से 60% मात्र बिनोले की होती है, जो पशु आहार के रूप में उपयोग में आता है। इससे पशुओं के दूध में बढ़ोतरी हो जाती है किंतु यहां भी किसान का घाटा बढ़ रहा है। क्योंकि जीएम बीटी कपास के बिनोले में विष की मात्रा होने से दूध में भी विष आ रहा है। इसलिए यह बिनोला भी उपयोग के योग्य नहीं रहा है। इससे कंगाली में आटा गीला की कहावत चरितार्थ हो रही है।

सरकार ने 11% आयात शुल्क को शून्य करने का कारण वस्त्र उद्योगपतियों को लाभ देना प्रकट किया है। इससे स्पष्ट है कि सरकार कपास उत्पादक किसानो को उद्योगपतियों के सामान महत्व नहीं देती है। सरकार की ऐसी भेदभाव पूर्ण नीतियों के कारण अमेरिकन दबाव से सफ़ेद सोना उत्पादक किसानों के काले दिन आने की संभावना बन गयी है।

–रामपाल जाट,
राष्ट्रीय अध्यक्ष- किसान महापंचायत

1970-80 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति लगातार बिगड़ती रही

सुनील दत्त गोयल

1991 का आर्थिक संकट भारत के लिए एक बड़ा झटका था। इस संकट के लिए कई कारण जिम्मेदार थे, जिनमें पिछली सरकारो की गलत नीतियां, संरचनात्मक कमियां और बाहरी आघात शामिल थे। इस संकट की जड़ें 1970 और 1980 के दशक में वित्त मंत्रालय और उस समय के आर्थिक सलाहकारों की नीतियों में छिपी हुई थीं। इस दौरान उनकी भूमिका और वित्त मंत्रालय की नीतियों की विफलताओं पर चर्चा की जानी चाहिए। 1991 के आर्थिक सुधारों को लेकर डॉ. मनमोहन सिंह का महिमामंडन अक्सर किया जाता है, लेकिन यह आवश्यक है कि इस पर तथ्यात्मक और निष्पक्ष विश्लेषण किया जाए।

1970–80 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति लगातार बिगड़ती रही। उस दौर में डॉ. मनमोहन सिंह विभिन्न उच्च पदों पर रहे, जिनमें मुख्य आर्थिक सलाहकार, भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर और योजना आयोग के उपाध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद शामिल थे।

इन पदों पर रहते हुए उन्होंने आर्थिक नीतियों को प्रभावित किया, लेकिन उन नीतियों में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं दिखाई दिया। इसके विपरीत, भारत की आयात नीतियों और संरक्षणवादी रुख ने कई घरेलू उद्योगों को कमजोर कर दिया।

यह जानना दिलचस्प है कि आपातकाल से पहले भारत में आयकर की अधिकतम दर लगभग 22 प्रतिशत थी, जो 1973–74 में बढ़कर 97.5 प्रतिशत से भी अधिक हो गई थी। यह दर उस समय की वित्तीय नीतियों की असफलता को दर्शाती है, जिसमें डॉ. सिंह का योगदान रहा, क्योंकि वे उस समय आर्थिक नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका में थे।

पाम ऑयल आयात की अनुमति जैसे निर्णयों ने भारतीय तेल उद्योग को भारी नुकसान पहुंचाया। इसी प्रकार, अनियंत्रित आयात नीतियों के कारण 1980 से 2010 के बीच भारत में कई लघु और मध्यम उद्योग बंद हो गए। यह दौर वही था, जब डॉ. सिंह नीति–निर्धारण का हिस्सा थे। ऐसे में यह सवाल उठत

धनतेरस पर गौशाला को दिया 10 बीघा भूमि और परिस

बूंदी। धनतेरस के पावन अवसर पर दान की महत्ता को चरितार्थ करते हुए, काटी निवासी राधेश्याम यादव ने एक अनुकरणीय और ऐतिहासिक कार्य किया है। उन्होंने अपनी 10 बीघा भूमि और उस पर निर्मित परिसर को केसरियाँ नाथ जोगनीय माँ गो सेवा समिति को दान कर दिया है। इसके साथ ही, उन्होंने 50 गोवंश को भी गौशालाओं को समर्पित किया है।

यादव वंश से संबंध रखने वाले राधेश्याम यादव ने गोवंश की सेवा और संरक्षण को अपने जीवन का उद्देश्य चुना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने लगभग डेढ़ करोड़ रुपये मूल्य का यह परिसर और भूमि समिति को सौंप दी। यह दान धनतेरस जैसे शुभ दिन पर किया गया, जिसने इस कार्य को और भी ऐतिहासिक बना दिया है। केसरियाँ नाथ जोगनीय माँ गो सेवा समिति से जुड़े सदस्यों ने राधेश्याम यादव के इस महान संकल्प का हृदय से स्वागत किया।

समिति के सदस्य आदित्य भंडारी, महेश कुमार जैन , डाक्टर पंकज जैन ,जैनेंद्र छाजेड, सौरभ भंडारी, शुभम जैन, सोनिल भंडारी, अंकुर शर्मा, संदीप गोलेचा और नवीन जैन ने इस अवसर पर राधेश्याम जी का अभिनंदन किया।

बीकानेर में भेड़, ऊंटनी के दूध से तैयार किया ड्रिंक

डायबिटीज और खून की कमी वाले मरीजों को फायदा

बीकानेर। राजस्थान की वेटरनरी यूनिवर्सिटी (बीकानेर) ने एक ऐसा ड्रिंक तैयार किया है, जिससे बीमारियां ठीक की जा सकेंगी। खास बात ये है कि इस ड्रिंक को गाय और बकरी के अलावा भेड़, ऊंटनी और गधी के दूध से तैयार किया गया है।

इस ड्रिंक को पेंटेंट करवाने का प्रोसेस भी किया जा रहा है। दावा किया जा रहा है कि पेटेंट के बाद जल्द ही ये स्पेशल ड्रिंक बाजार में उपलब्ध होगी। इसे तैयार करने वाले एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मुकुल सैन का दावा है कि ये ड्रिंक डायबिटीज और एनीमिया जैसी बीमारियों में फायदेमंद होगी। इसकी एक खास बात ये भी है कि ये 10 दिन तक खराब भी नहीं होगी।

दरअसल, डायबिटीज, एनिमिया, कब्ज और पेट की बीमारियों समेत वे लोग जिन्हें बीमारी के दौरान मुंह से खाने में परेशानी होती है, उन्हें ध्यान में रखकर इस पर रिसर्च शुरू की गई थी। इस ड्रिंक को सांगरी, तुलसी के बीज, सहजन, मल्टीग्रेन, अलसी, अजवाइन, पुदीना, धनिया, तिल और मल्टीग्रेन भी मिलाया गया है। इसे सिन बायेटिक थेरेब्यूटिक हेल्थ ड्रिंक नाम दिया गया है। इस ड्रिंक को तैयार करने के लिए पांच जानवरों का दूध लिया गया। इसमें गाय, बकरी, भेड़, ऊंटनी और गधी का दूध था। इन सभी औषधीय प्लांट्स की बराबर मात्रा के अनुसार लिया गया। इसके बाद इन सभी का पाउडर तैयार कर इन्हें पांच अलग–अलग दूध में मिलाया गया। दो दिन तक इन मिक्सर को फर्मेंटेशन किया गया। इसके बाद इस मिक्सर को एक समान तापमान में गर्म किया गया। ध्यान रखा गया कि जिस तापमान में ये जितने समय में गर्म हुआ है उसी तापमान और समय में इसे दोबारा नॉर्मल किया जाए। दो दिन के इस पूरे प्रोसेस के बाद ये खास ड्रिंक तैयार हुआ। डॉ. मुकुल सैन ने बताया कि फर्मेंटेशन के बाद रिजल्ट अलग–अलग थे लेकिन सभी पॉजिटिव थे। सैंपल बनाने के बाद सर्वाधिक सही और औषधीय गुण वाले सैंपल को पेटेंट के लिए भेजा गया है। इसके लिए इंडियन पेटेंट ऑफिस को एप्लिकेशन दी गई। इस पर पेटेंट ऑफिस ने रिसर्च कर पता लगाया कि अब तक इस तरह का काम नहीं हुआ है। इसके बाद एप्लिकेशन को स्वीकृत कर लिया गया। अब इसका सर्टिफिकेशन होना बाकी है। पेटेंट मिलने के बाद इस फॉर्मूले को बाजार में दिया जाएगा। प्राइवेट और सरकारी फर्मों को एक एमओयू के तहत इसका लिटरेचर दिया जाएगा। डेयरी इंडस्ट्री में ये एक नया ब्रेवरेज ड्रिंक का स्थान ले सकता है। डॉ. सैन बताते हैं कि इस ड्रिंक में प्रोटीन, फाइबर, मिनरल्स, एंटी ऑक्सीडेंट, मल्टी एंजाइम होंगे। इससे ये मल्टी न्यूट्रिशनल प्रोडक्ट के रूप में काम आ सकेगा। इसके लिए जिन लोगों को मुंह से खाना खाने में परेशानी हैं, उन्हें ड्रिंक के रूप में भारी भोजन दिया जा सकता है। साथ ही पेट की बीमारियों से ग्रसित रोगियों के लिए भी उपयोगी साबित हो सकता है। वेटरनरी यूनिवर्सिटी के डेयरी साइंस के प्रोफेसर राहुल सिंह पाल ने बताया कि ये रिसर्च पिछले आठ महीने से चल रहा है। इसे करीब 22 बार बनाया गया था। इसके बाद इसे स्टाफ के लोगों को पिलाया गया, जिसमें किसी भी स्तर पर नुकसान सामने नहीं आया है। इस ड्रिंक को अगर रेफ्रिजरेटर में रखा जाता है तो पांच से सात दिन तक खराब नहीं होता। वहीं, अगर इसकी पैकिंग कर दी जाए तो दस दिन तक खराब नहीं होगा। ऐसे में कहीं भी बनाकर इसे आगे एक्सपोर्ट किया जा सकता है। डॉ. मुकुल सेन वेटरनरी यूनिवर्सिटी में टीचिंग एसोसिएट के रूप में काम कर रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 20 अक्टूबर, 2025

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, हस्त नक्षत्र रात्रि 8:17 तक, वैधृति योग रात्रि 2:35 तक, शकुनि करण दिन 3:45 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–तुला, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–तुला, बुध–तुला, गुरू–कर्क, शुक्र–कन्या, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजा, महाकाली पूजा, वैधृति पुण्य, कमला जयन्ती है। दीपावली लक्ष्मी पूजन प्रदोष युक्त अमावस्या को स्थिर लग्न–स्थिर नवांश में किया जाना सर्वश्रेष्ठ है। लक्ष्मी पूजा समय प्रदोष काल सायं 5:51 से रात्रि 8:23 तक, वृष लग्न रात्रि 7:18 से 9:15 तक, सिंह लग्न मध्य रात्रि 1:48 से 4:04 तक है। पूजा का सर्वश्रेष्ठ समय 7:30 से 7:42 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 5:57 तक, शुभ 9:22 से 10:42 तक, चर 1:36 से 3:01 तक, लाभ अमृत 3:01 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:33, सूर्यास्त 5:51

मेष
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये–पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। घर–परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। परिवार में वाद–विवाद हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं, सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।